दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

दिनांकः 22.05.2015

Time: 10.00 am to 01.00 pm **एम.ए., (प्रथम वर्ष)** **पूर्णांकः75**

हिन्दी प्रश्न पत्र-2

आधुनिक हिन्दी काव्य

I. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 4x10=40

1. 'कामायनी छायावादी युग की सर्वश्रेष्ठ रचना है।' सिद्ध कीजिए।
2. 'परिवर्तन' कविता में अभिव्यक्त पंत की चेतना एवं प्रकृति के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
3. निराला के साहित्यिक संघर्ष को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।
4. 'साकेत' के नामकरण का औचित्य सिद्ध कीजिए।
5. महादेवी वर्मा की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
6. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए।
   क. उर्मिला के विरह की स्थिति ।
   ख. असाध्य वीणा की भाषा।
   ग. मुक्तिबोध की काव्यभाषा।
   घ. 'हे चिर महान'

II. निम्नलिखित पद्यांसों की सप्रसंग व्याख्या कीजिएः **5x7=35**

1. ''कौन तुम? संसृति-जलनिधि तीर तरंगों से फेंकी मणि एक,
   कर रहे निर्जन का चुपचाप प्रभा की धारा से अभिषेक
   मधुर विश्रांत और एकांत-जगत का सुलझा हुआ रहस्य,
   एक करूणामय सुंदर मौन और चंचल मन का आलस्य।

   अथवा

   ''चिंता करता हूँ मैं जितनी उस अतीत की, उस सुख की,
   उतनी ही अनंत में बनती जाती रेखाएँ दुख की।
   आह! सर्ग के अग्रदूत! तुम असफल हुए, विलीन हुए।
   भक्षक या रक्षक, जो समझो केवल अपने मीन हुए।

2. धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
   धिक साधन, जिसके लिए सदा ही किया शोध।
   जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका।
   वह एक और मन रहा राम का जो न थका,
   जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय।

   अथवा

   है अमानिशा उगलता गगन घन अधकार
   खो रहा दिशा का ज्ञान स्तब्ध है पवन - चार
   अप्रतिहन गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
   भूधर ज्यों ध्यानमग्न, केवल जलती मशाल।

3. ''गा तू!
यह वीणा रक्खी हैः तेरा अंग-अपंग।
किंतु अंगी, तू अक्षत, आत्म-भरित
रसविद्
तू गा
मेरे अँधियारे अंतस में आलोक जगा
स्मृति का,
श्रुति का -
तू गा, तू गा, तू गा, तू गा।

अथवा

सब ने अलग-अलग संगीत सुना।
इसको,
वह कृपा-वाक्य था प्रभुओं का-
उसको,
आतंक-मुक्ति का आश्वास
इसको
वह भरी तिजोरी में सोने की खनक-
उसे,
बुटली में बहुत दिनों के बाद अन्न
की सौंधीरवुदबुद।

4. हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हमको छोड़ का स्रोतस्विनी बह जाय।
वह हमें आकार देती है
हमारे कोण, गलियाँ, अंतरीप, उभार, सैकन-कूल
सब गोलाइयाँ उसकी गढ़ी हैं।

अथवा

यह वीणा उत्तराखंड के गिरि -प्रान्तर से
घने वणों में जहाँ तपस्या करते हैं व्रतचारी-
बहुत समय पहले आयी थी।
पूरा तो इतिहास न जान सके हम;
किंतु सुना है
वज्रकिर्ति ने मंत्रपूत जिस
अति प्राचीन किरीटी तरु से इसे गढ़ा था।

5. व हर एक आत्मा का इतिहास
हर एक देश व राजनीतिक स्थिति और परिवेश
प्रत्येक मानवीय स्वानुभूत आदर्श
विवेक-प्रक्रिया, क्रियागत परिणति!!
खोजा हूँ पठार-------पहाड समुंदर
जहाँ मिल सके मुझे
मेरी वह खाई। हुई
परम अभिव्यक्ति अनिवार
आत्म - संभवा।

अथवा

कमरे में सुबह की धूप आ गई ह
गैलरी में फैला है सुनहला रवि छोर
क्या कोई प्रेमिका सचमुच मिलेगी?
हाय! यह वेदना स्नेह की गहरी
जान गई क्योंकर?

.....